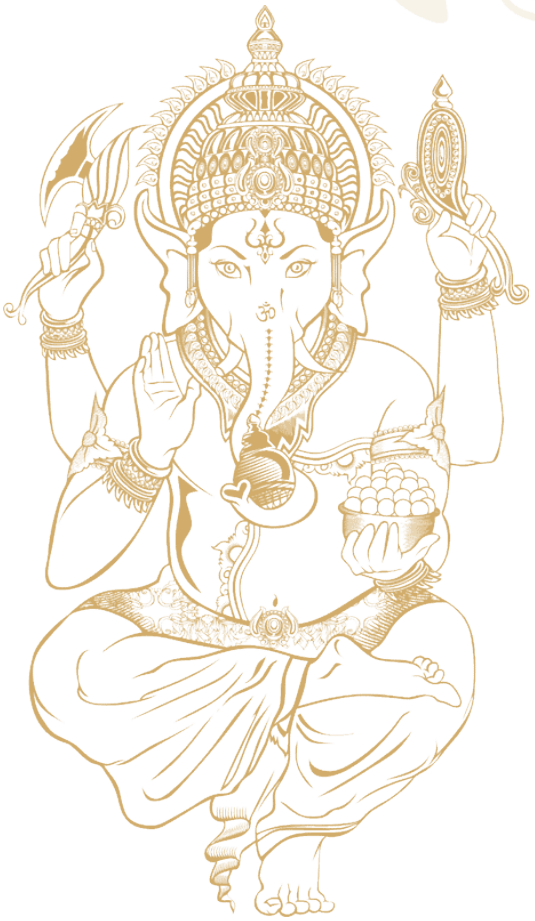

Mr.

23 Mar 1983

09:00 PM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121703001

तिथि 23/03/1983 **समय** 21:00:00 **वार** बुधवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:37:05
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	08:41:06 घं
वेलान्तर	00:06:48 घं
सूर्योदय	06:22:47 घं
सूर्यास्त	18:33:32 घं
चैत्रादि संवत	2039
शक संवत	1904
मास	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	10
नक्षत्र	पुनर्वसु
योग	अतिगण्ड
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मार्जार
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	हा-हरीश
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	बुध
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

गुरु 5वर्ष 1मा 3दि
केतु
25/04/2024
26/04/2031

केतु	22/09/2024
शुक्र	22/11/2025
सूर्य	30/03/2026
चन्द्र	29/10/2026
मंगल	27/03/2027
राहु	13/04/2028
गुरु	20/03/2029
शनि	29/04/2030
बुध	26/04/2031

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 7मा 19दि
भ्रामरी
11/11/2022
11/11/2026

भ्रामरी	22/04/2023
भद्रिका	11/11/2023
उल्का	11/07/2024
सिद्धा	21/04/2025
संकटा	12/03/2026
मंगला	22/04/2026
पिंगला	12/07/2026
धान्या	11/11/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			11:33:02	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	---	0:00			
सूर्य			08:48:58	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	मित्र राशि	1.11	ज्ञाति	पितृ	सम्पत
चंद्र			29:05:22	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	सूर्य	मित्र राशि	1.15	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			26:41:59	मीन	रेवती	4	बुध	गुरु	मित्र राशि	1.04	अमात्य	भ्रातृ	विपत
बुध		अ	06:00:05	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	नीच राशि	1.05	कलत्र	ज्ञाति	सम्पत
गुरु			17:16:34	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	बुध	मित्र राशि	1.01	भ्रातृ	धन	विपत
शुक्र			11:30:27	मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	सम राशि	1.24	मातृ	कलत्र	क्षेम
शनि	व		09:33:58	तुला	स्वाति	1	राहु	गुरु	उच्च राशि	1.38	पुत्र	आयु	अतिमित्र
राहु	व		05:47:58	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	चंद्र	उच्च राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		05:47:58	धनु	मूल	2	केतु	राहु	उच्च राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

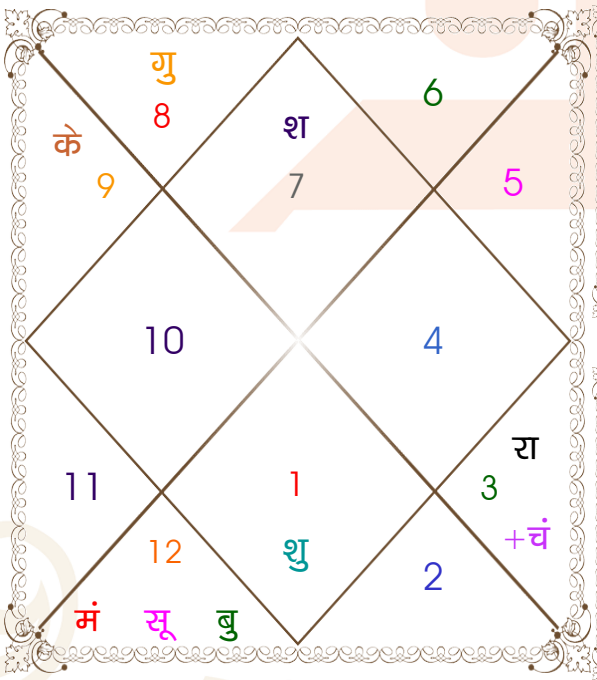

चन्द्र कुंडली

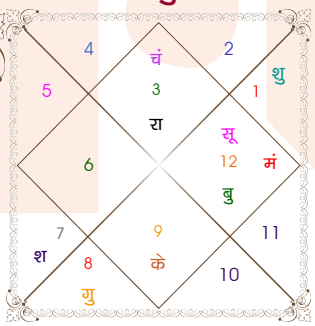

नवमांश कुंडली

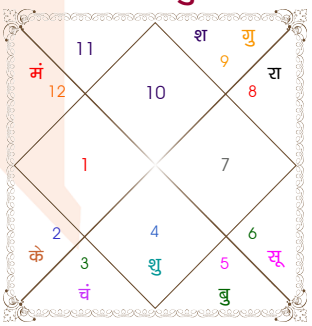

सर्वाष्टकवर्ग

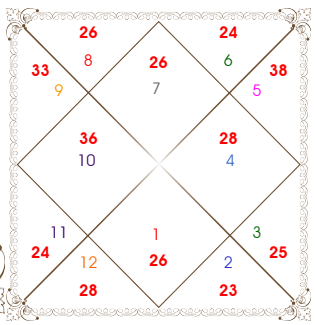

दशमांश कुंडली

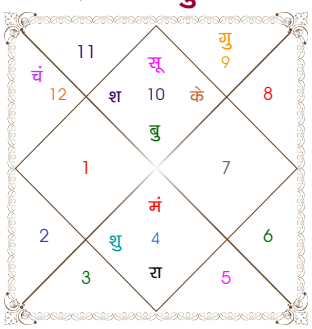

नक्षत्रफल

आप पुनर्वसु नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध हैं। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मेष, गण देव, नाड़ी आद्य तथा योनि मार्जार होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "ह" अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा हरीश।

आपका स्वभाव अत्यन्त ही शान्त तथा सहनशील होगा। कठिन संकट की घड़ी में भी आपको किसी प्रकार की घबराहट या उतावलापन नहीं होगा। आप अपने जीवन में समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों के उपभोग करने वाले पुरूष होंगे। शारीरिक दृष्टि से आप अच्छे स्वास्थ्य से युक्त होकर गौरवर्ण के तथा सुन्दर होंगे। भाग्य बल पर आप खूब उन्नति करेंगे। समाज में आपकी लोकप्रियता आपके कल्याणकारी कार्यों के द्वारा रहेगी क्योंकि आप सभी वर्गो की भलाई के लिए कार्य करेंगे। साथ ही आप पुत्र तथा मित्रों से भी हमेशा युक्त रहेंगे।

शान्तः सुखी च सम्भोगी सुभगो जनबल्लभः।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ।।
मानसागरी

अर्थात् पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न जातक, शान्त सुखी, भोगी, सुन्दर, लोकप्रिय तथा पुत्र एवं मित्रों से युक्त होता है।

आप का स्वभाव अच्छा तथा चाल चलन उत्तम रहेगा। यदा कदा आपकी मति में दुष्टता का भाव उत्पन्न होगा फलस्वरूप आप दुष्कर्म करने की ओर प्रेरित होंगे। जीवन में आप हमेशा तृष्णा से आतुर रहेंगे तथा इससे आपकी तृप्ति कभी नहीं होगी। लेकिन सन्तोष का भाव भी आपके मन में रहेगा। किसी वस्तु या द्रव्य की अल्प प्राप्ति में ही पूर्ण रूप से सन्तुष्टि का अनुभव करेंगी।

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च।
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक क्लेश की स्थिति में भी सहनशील, सुखी, सुशील, दुष्टबुद्धिवाला, तृषाकुल तथा थोड़े से ही सन्तुष्ट होने वाला होता है।

ज्ञानालोक से आप प्रकाशित रहेंगे तथा कठिन से कठिन विषयों का आपको ज्ञान रहेगा। समाज में आप धन तथा बल के प्रभाव से कीर्तिवान कहलाएंगे। आप लेखन कार्य के प्रति आकर्षित रहेंगे तथा कविता सृजन या रचना में आप सफलता प्राप्त करेंगे।

गूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलविख्यातः कविः कामुकः।
जातकपारिजातः

अर्थात पुनर्वसु में उत्पन्न जातक गूढात्मा, धन तथा बल से विख्यात, कवि तथा कामुक प्रकृति का होता है।

आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा शास्त्रों के ज्ञान प्राप्ति के लिए आप इनके अध्ययन में सतत् तत्पर रहेंगे। आप शुभ रत्न तथा सोने से बनाए गये गहनों से सुशोभित रहेंगे। दानशीलता का भाव भी आपके मन में व्याप्त रहेगा तथा द्रव्य एवं भूमि से भी आप युक्त रहेंगे।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः।
दाता धरित्री वसुभि समेतः पुनर्वसु यस्य भवेत्प्रसूतौ।
जातकाभरणम

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक अधिक मित्रों वाला, शास्त्रों का अभ्यास करने वाला, रत्नस्वर्णादि आभूषणों से परिपूर्ण, दान, द्रव्य एवं भूमि से युक्त होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में स्त्री एवं पुत्रोंसहित धन धान्य से सर्वदा सम्पूर्ण रहेंगे। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित होगे तथा तीर्थ यात्राओं के प्रति भी आपकी श्रद्धा तथा रूचि रहेगी। जीवन में आप समस्त भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही काव्य शास्त्र में भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसके अध्ययन में भी आप तत्पर रहेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुशोभित रहेंगे। आप के सभी कार्य प्रारम्भिक अवस्था में ही सिद्ध हो जाएंगे। बन्धुजनों से आपके मधुर एवं स्नेह पूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपका भाग्य भी उत्तम रहेगा एवं अनुकूल समय पर उदय होगा। धार्मिक तथा पितृ आदि कार्यों के प्रति भी आप निष्ठावान रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सद्‌गुणों से सम्पन्न पुत्रों से सर्वदा युक्त रहेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

आप मिथुन राशि मैं पैदा हुए हैं। अतः आप के नेत्र अल्प रक्तिमता लिए हुए काले रंग के तथा सिर के बाल घुंघराले होंगे। आप के शरीर के समस्त अंग पुष्ट कोमल तथा स्वस्थ होंगे तथा नासिका भी उन्नत होगी। आप विभिन्न शास्त्रों के विषय में ज्ञान प्राप्ति के लिए इच्छुक रहेंगे तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञान की प्राप्ति में सफलता प्राप्त करेंगे। सन्देशों के आदान प्रदान संबंधी कार्य को आप प्रवीणता से सम्पन्न करेंगे। आप अत्यन्त तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा इसके द्वारा दूसरे लोगों की मन की बात को जानने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप दूसरों से विनयशील व्यवहार रखेंगे जिससे आप सबकी प्रशंसा के पात्र रहेंगे। आपकी वाणी मधुर तथा उत्तम होगी जो श्रोता को आनन्द प्रदान करेगी। हंसने तथा हंसाने के कार्य में आप अति निपुणता का प्रदर्शन करेंगे। संगीत में आपकी तीव्र अभिरूचि होगी तथा नृत्य शास्त्र के आप विद्वान होंगे।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुञ्चिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।

चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आप ऊंचे कद के पुरूष होंगे तथा नसें आपकी शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होंगी साथ ही हाथ में आपकी मछली का चिन्ह भी हो सकता हैं। आप देखने में सुन्दर तथा दर्शनीय होंगे। काव्य लेखन में आपकी स्वाभाविक रूचि होगी तथा साहित्य या कविता सृजन में आपको सफलता की प्राप्ति हो सकती हैं। समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों के उपभोग करने का सौभाग्य आपको प्राप्त होगा। सौभाग्य से आप हमेशा युक्त रहेंगे परन्तु स्त्री के हमेशा वश में रहेंगे तथा उससे पराजित भी रहेंगे।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आजीवन आप हास्यकारी अर्थात हंसने तथा हंसाने के कार्य को करते रहेंगे। भ्रमण या घूमना फिरना आपको रूचिकर लगेगा तथा घर के अन्दर रहकर भी सुखानुभूति प्राप्त करेंगे।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

समाज में आप अपने सत्कार्यों तथा सद्व्यवहार के कारण अत्यन्त लोकप्रिय रहेंगे तथा सभी वर्गों से मान सम्मान प्राप्त करेंगे। स्त्री वर्ग आपसे विशेष आकर्षित रहेगा तथा स्त्री समाज में आप प्रिय एवं आदरणीय समझे जाएंगे। आप अपनी प्रतिभा तथा सज्जनता के द्वारा समाज में आदर तथा गौरव को भी प्राप्त करेंगे।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

अपने लेख तथा भाषण में आप श्लिष्टयुक्त स्पष्ट वाक्यों का प्रयोग करेंगे जिससे अन्य जन सुगमता से हृदयंगम करने में सफल रहेंगे। आप अपने संबंधियों तथा समाज के सभी वर्गों के हित कार्य करने के लिए सदा तन मन धन से तत्पर रहेंगे। आपका चाल चलन श्रेष्ठ तथा प्रकृति पित्त कफ मिश्रित रहेगी।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।

भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपकी दृष्टि हमेशा चंचल रहेगी। नृत्य एवं संगीत के प्रति आपका अगाध प्रेम रहेगा तथा अपने वैभव एवं ऐश्वर्य के द्वारा समाज में दूर दूर तक यश की प्राप्ति करेंगे। भाषण देने में भी आप अत्यन्त प्रवीण होंगे तथा दृढ़ विचार एवं संकल्प वाले भी होंगे। न्याय में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा सर्वकार्यों को सिद्ध करने में आप सर्वथा समर्थ रहेंगे।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आपका जन्म देव गण में हुआ हैं। अतः आप सुमधुर श्रेष्ठवाणी बोलने वाले होंगे जिससे दूसरे व्यक्ति नित्य आपसे प्रभावित रहेंगे। आप सरल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा सरलता से ही विचारों का आदान प्रदान करेंगे। आप सात्विक भोजन करना नित्य पसन्द करेंगे। गुणों के आप जानकार होंगे तथा स्वयं उच्चकोटि के विद्वानों द्वारा कथित गुणों से सुशोभित रहेंगे। आपके पास कभी भी धन तथा ऐश्वर्य का अभाव नहीं रहेगा।

आपका शरीर देखने में स्वस्थ तथा सुन्दर रहेगा। आप दानी प्रवृति के होंगे तथा अवसरानुकूल यथा शक्ति आप इसका प्रदर्शन करेंगे। इस पवित्र कार्य से समाज में आपके मानसम्मान तथा प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि होगी। आप हमेशा सादगी पसन्द रहेंगे तथा भौतिकता एवं दिखावे से दूर रहेंगे। साथ ही आप उच्चकोटि के विद्वान भी हो सकते हैं।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मार्जार योनि में पैदा होने के कारण आप स्वभाव से ही पराक्रमी होंगे तथा अपने कार्यों को अपने पराक्रम तथा चतुराई से सम्पन्न करेंगे। मीठा भोजन तथा मीठा पेय पीना आपको अत्यन्त ही आनन्ददायक तथा रूचिकर लगेगा। आप भय के भाव से सदा विहीन रहेंगे अर्थात् आप प्रारम्भ से ही निर्भीक रहेंगे। परन्तु कभी कभी आपका स्वभाव दुष्कर्मों को करने के लिए भी उद्यत रहेगा।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में

उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई तक स्वाती नक्षत्र, परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इस समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको प्रातः तथा सायं काल नियमित रूप से गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के व्रत रखने चाहिए। साथ ही पन्ना, मिश्री, हरा वस्त्र इत्यादि पदार्थो को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा अन्य लाभ मार्ग प्रशस्त होगे। साथ ही बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप करवाने चाहिए।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं थीं बुधाय नमः।